बाल राम कथा

‘अवधपुरी में राम’

(मॉड्यूल–2/2)

प्रसंग भाग–2

अधोलिखित गद्यांश 'अवधपुरी में राम' पाठ के भाग–2 से उद्धृत हैं। पूर्वपठित भाग–1 में कोसल राज्य की राजधानी अयोध्या नगरी की प्राकृतिक सुन्दरता एवं सामाजिक भव्यता का अत्यंत मनोरम चित्रण किया गया है, आगे पुत्रेष्टि यज्ञ करने पर अग्निदेव की कृपा से राजा दशरथ को चार पुत्रों की प्राप्ति एवं उनकी शिक्षा–दीक्षा का वर्णन है।

इस दूसरे भाग में ऋषि विश्वामित्र का अयोध्या आगमन तथा राक्षसों द्वारा यज्ञ रक्षा के लिए दशरथ से राम को साथ ले जाने का प्रस्ताव विषयक चर्चा है।

आगे की कथावस्तु में विश्वामित्र का प्रस्ताव सुनकर दशरथ का पुत्रमोह में दुखी होकर मूर्छित होना तथा पुनः होश आने पर विश्वामित्र को, राम को साथ ले जाने से मना करना। इस प्रकार दशरथ के मना करने पर विश्वामित्र का क्रोधित होना फिर वशिष्ठ मुनि का राम की शक्ति और विश्वामित्र की महानता के बारे में समझाने पर दशरथ का राम के साथ लक्ष्मण को भी ले जाने का आग्रह विश्वामित्र से करना। अंत में विश्वामित्र द्वारा दशरथ का आग्रह स्वीकार करना तथा भावुक मन से दशरथ द्वारा राम और लक्ष्मण को ऋषि विश्वामित्र के साथ विदा करना। इस प्रकार की कथावस्तु इस दुसरे भाग में वर्णित है।

सारांश भाग–2

एक दिन जब राजकुमारों के विवाह के बारे में मंत्रणा चल रही थी उसी समय महर्षि विश्वामित्र वहाँ पधारे। दशरथ ने उन्हें ससम्मान ऊँचा आसन दिया और उनके आने का कारण पूछा। उन्होंने राजा दशरथ से कहा कि मैं सिद्धि के लिए एक यज्ञ कर रहा हूँ। उस यज्ञ में राक्षस आकर बाधा डाल रहे हैं। उन राक्षसों को आपका जेष्ठ पुत्र राम ही मार सकता है। इसलिए यज्ञ की रक्षा के लिए अपने जेष्ठ पुत्र राम को मुझे दे दें ताकि यज्ञ पूरा हो सके। राजा दशरथ ने कहा मेरा राम तो अभी सोलह वर्ष का ही है वह राक्षसों से कैसे लड़ेगा? वह अपने प्रिय पुत्र राम को अपने से दूर नहीं भेजना चाहते थे।

ऋषि ने दशरथ से कहा कि वे रघुकुल की रीति तोड़ रहे हैं। वचन देकर पीछे हट रहे हैं। यह कुल के विनाश का सूचक है। ऐसा होता देख मुनि वशिष्ठ आगे आए। उन्होंने कहा महर्षि विश्वामित्र सिद्ध पुरुष है। अनेक गुप्त विद्याओं के जानकार हैं। राम भी उनसे अनेक विद्याएँ सीख सकेंगे। दशरथ ने दुखी मन से यह बात स्वीकार कर ली परंतु उन्होंने राम के साथ लक्ष्मण को भी ले जाने का आग्रह किया। विश्वामित्र ने दशरथ की बात को मान लिया। दशरथ ने राम-लक्ष्मण को दरबार में बुलाकर अपने निर्णय के बारे में बताया। दोनों भाइयों ने आदर सहित सिर झुकाकर निर्णय स्वीकार किया। दोनों राजकुमार बिना देर किए महर्षि के साथ घनघोर जंगलों की ओर चल पड़े। विश्वामित्र आगे-आगे राम और लक्ष्मण धनुष संभाले और तरकश बांधे पीछे चल रहे थे।